3 धन धन जैनी साधु अबाधित...

धन धन जैनी साधु अबाधित, तत्त्वज्ञान विलासी हो ।।
दर्शन बोध मयी निज मूरत, जिनको अपनी भासी हो ।
त्यागी अन्य समस्त वस्तु में, अहं बुद्धि दुखदासी हो ।।
धन धन जैनी साधु....

जिन अशुभोपयोग की परिणति, सत्ता सहित विनाशी हो ।
होय कदाच शुभोपयोग तो, तहँ भी रहत उदासी हो ।।
धन धन जैनी साधु....

छेदत जे अनादि दुखदायक, दुविधि बंध की फाँसी हो ।
मोह क्षोभ रहित जिन परिणति, विमल मयंक कला सी हो ।।
धन धन जैनी साधु....

विषय चाह दव दाह बुझावन, साम्य सुधारस रासी हो ।
भागचन्द ज्ञानानन्दी पद, साधत सदा हुलासी हो ।।
धन धन जैनी साधु....

वे दिगम्बर मुनिराज धन्य हैं जो निर्बाध रूप से तत्त्वज्ञान के आनंद में आनंदित रहते हैं।।टेक।।

जो ज्ञान दर्शनमयी अपनी आतमा में अपनापन का अनुभव करते हैं। जिन्होनें समस्त पर वस्तुओं में उस दुख देने वाली एकत्व की मान्यता का त्याग कर दिया हैं।।१।।

वे दिगम्बर मुनिराज धन्य हैं जिन्होंने अशुभ उपयोग की परिणति को मूल से ही नष्ट कर दिया है और यदि–कदाचित शुभ उपयोग होता है तो उसके प्रति भी वह रुचि नहीं रखते हैं।।२।।

वे दिगम्बर मुनिराज धन्य हैं जिन्होंने अनादिकाल से दुख देने वाले द्रव्य बंध और भाव बंध का नाश कर दिया है जिससे उनकी परिणति मोह राग द्वेष से रहित हो गई है मानो वह कालिमा रहित चंद्रमा की कला ही हो।।३।।

वे दिगम्बर मुनिराज धन्य हैं जिन्होंने विषय भोगों की इच्छा रूपी अग्नि को बुझा दिया है और समता रूपी अमृत का निरन्तर पान करते हैं। कविवर भागचन्दजी कहते हैं कि ज्ञान और आनंद रूपी आत्मा को साधने में हमेशा उत्साहवंत मुनिराज धन्य हैं।।४।।